Toppersnotes
Unleash the topper in you

UP – PGT

स्नातकोत्तर शिक्षक

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

संस्कृत

भाग – 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

भाग – 1

क्र.स.	विषयवस्तुः	पृष्ठ सं.
1.	माहेश्वर सुत्र/प्रत्याहार (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त)	1
2.	लकार भू, गम्, पठ्, पा/पिब्, लभ्, हन्, दुह, दा, भी, दिव्, जनि, तुद्, रुध्, प्रच्छ, चूर (आत्मस्नैपदी) (परमस्नैपदी)	33
3.	संधि	52
4.	समास	66
5.	कारक	83
6.	प्रत्यय	94
7.	संख्या ज्ञान (1 से 100)	105
8.	वाक्य परिवर्तन/वाक्य परिवर्तन	111
9.	प्रशिक्षण विधियाँ एवम् पठ्न विधियाँ	122

पाणिनी के 14 माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्र (संस्कृतः शिवसूत्राणि या महेश्वर सूत्राणि) को संस्कृत व्याकरण का आधार माना जाता है। पाणिनि ने संस्कृत भाषा के तत्कालीन स्वरूप को परिष्कृत एवं नियमित करने के उद्देश्य से भाषा के विभिन्न अवयवों एवं घटकों यथा ध्वनि-विभाग (अक्षरसमाम्नाय), नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण), पद, आख्यात, क्रिया, उपसर्ग, अव्यय, वाक्य, लिङ्ग इत्यादि तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों का समावेश अष्टाध्यायी में किया है। अष्टाध्यायी में 32 पाद हैं जो आठ अध्यायों मे समान रूप से विभक्त हैं।

व्याकरण के इस महनीय ग्रन्थ मे पाणिनि ने विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के विशाल कलेवर का समग्र एवं सम्पूर्ण विवेचन लगभग 4000 सूत्रों में किया है, जो आठ अध्यायों में (संख्या की -ष्टि से असमान रूप से) विभाजित हैं। तत्कालीन समाज मे लेखन सामग्री की दुष्प्राप्यता को ध्यान में रखते हुए पाणिनि ने व्याकरण को स्मृतिगम्य बनाने के लिए सूत्र शैली की सहायता ली है। पुनः, विवेचन को अतिशय संक्षिप्त बनाने हेतु पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों से प्राप्त उपकरणों के साथ-साथ स्वयं भी अनेक उपकरणों का प्रयोग किया है जिनमे शिवसूत्र या माहेश्वर सूत्र सबसे महत्वपूर्ण हैं।
माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है।

ष्नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामो सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥ष

अर्थातः-

1. "नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (शिव) ने सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना का उद्धार (पूर्ति) के लिये नवपञ्च (चौदह) बार डमरू बजाया। इस प्रकार चौदह शिवसूत्रों का ये जाल (वर्णमाला) प्रकट हुयी।"
2. डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्रकाट्य हुआ। इसलिये व्याकरण सूत्रों के आदि-प्रवर्तक भगवान नटराज को माना जाता है।

प्रसिद्धि है कि महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया जो कि पाणिनीय संस्कृत व्याकरण का आधार बना।

माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या 14 है जो निम्नलिखित हैं:

1. अ, इ, उ, ण्
2. ऋ, ऌ, क्
3. ए, ओ, ङ्
4. ऐ, औ, च्
5. ह, य, व, र, ट्
6. ल, ण्
7. ञ, म, ङ, ण, न, म्
8. झ, भ, ञ्
9. घ, ढ, ध, ष्
10. ज, ब, ग, ड, द, श्
11. ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, व्
12. क, प, य्
13. श, ष, स, र्
14. ह, ल्

माहेश्वर सूत्र की व्याख्या:

उपर्युक्त 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के वर्णों (अक्षरसमाम्नाय) को एक विशिष्ट प्रकार से संयोजित किया गया है। फलतः, पाणिनि को शब्दों के निर्वचन या नियमों मे जब भी किन्ही विशेष वर्ण समूहों (एक से अधिक) के प्रयोग की आवश्यकता होती है, वे उन वर्णों (अक्षरों) को माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाकर संक्षेप मे ग्रहण करते हैं। माहेश्वर सूत्रों को इसी कारण 'प्रत्याहार विधायक' सूत्र भी कहते हैं। प्रत्याहार बनाने की विधि तथा संस्कृत व्याकरण मे उनके बहुविध प्रयोगों को आगे दर्शाया गया है।

इन 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों को समावेश किया गया है। प्रथम 4 सूत्रों (अइउण् – ऐऔच्) में स्वर वर्णों तथा शेष 10 सूत्र व्यञ्जन वर्णों की गणना की गयी है। संक्षेप में –

1. स्वर वर्णों को अच् एवं
2. व्यञ्जन वर्णों को हल् कहा जाता है।

अच् एवं हल् भी प्रत्याहार हैं।

प्रत्याहार – माहेश्वर सूत्रों की व्याख्या

महेश्वर सूत्र 14 है। इन 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के वर्णों (अक्षरसमाम्नाय) को एक विशिष्ट प्रकार से संयोजित किया गया है। फलतः, महर्षि पाणिनि को शब्दों के निर्वचन या नियमों मे जब भी किन्ही विशेष वर्ण समूहों (एक से अधिक) के प्रयोग की आवश्यकता होती है, वे उन वर्णों को माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाकर संक्षेप में ग्रहण करते है। माहेश्वर सूत्रों को इसी कारण 'प्रत्याहार विधायक' सूत्र भी कहते हैं। प्रत्याहार बनाने की विधि तथा संस्कृत व्याकरण मे उनके बहुविध प्रयोगों को आगे दर्शाया गया है। इन 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों का समावेश किया गया है। प्रथम 4 सूत्रों (अइउण् – ऐऔच्) में स्वर वर्णों तथा शेष 10 सूत्रों में व्यञ्जन वर्णों की गणना की गयी है। संक्षेप में –

1. स्वर वर्णों को अच् एवं
2. व्यञ्जन वर्णों को हल् कहा जाता है।

अच् एवं हल् भी प्रत्याहार हैं।

"प्रत्याहार" का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के 71 वे सूत्र 'आदिरन्त्येन सहेता' द्वारा प्रत्याहार बनाने की विधि का महर्षि पाणिनि ने निर्देश किया है।

आदिरन्त्येन सहेताः (आदिः) आदि वर्ण (अन्त्येन इता) अन्तिम इत् वर्ण (सह) के साथ मिलकर प्रत्याहार बनाता है जो आदि वर्ण एवं इत्संज्ञक अन्तिम वर्ण के पूर्व आए हुए वर्णों का समष्टि रूप में (collectively) बोध कराता है।

उदाहरणः–

- अच् = प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐऔच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अपने आदि अक्षर 'अ' से लेकर इत्संज्ञक च् के पूर्व आने वाले औ पर्यन्त सभी अक्षरों का बोध कराता है। अतः –
- अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ
- इसी तरह हल् प्रत्याहार की सिद्धि 5 वे सूत्र हयवरट् के आदि अक्षर 'ह' को अन्तिम 14 वें सूत्र हल् के अन्तिम अक्षर ल् के साथ मिलाने (अनुबन्ध) से होती है। फलतः–
- हल् = ह य व र, ल, ञ म ङ ण न, झ भ, घ ढ ध, ज ब ग ड द, ख फ छ ठ थ च ट त, क प, श ष, स, ह।

उपर्युक्त सभी 14 सूत्रों में अन्तिम वर्ण की इत् संज्ञा श्री पाणिनि ने की है। इत् संज्ञा होने से इन अन्तिम वर्णों का उपयोग प्रत्याहार बनाने के लिए केवल अनुबन्ध (Bonding) हेतु किया जाता है, किन्तु व्याकरणीय प्रक्रिया मे इनकी गणना नही की जाती है अर्थात् इनका प्रयोग नही होता है।

इन सूत्रों से कुल 41 प्रत्याहार बनते हैं। एक प्रत्याहार उणादि सूत्र (1.114) से "जमन्ताडुः" से जम् प्रत्याहार और एक वार्तिक से "चयोः द्वितीयः शरि पौष्करसादेः" (7.4.49) से बनता है। इस प्रकार कुल 43 प्रत्याहार हो जाते हैं।

इन सूत्रों से सैकडों प्रत्याहार बन सकते है, किन्तु पाणिनि मुनि ने अपने उपयोग के लिए 41 प्रत्याहारों का ही ग्रहण किया है। प्रत्याहार दो तरह से दिखाए जा सकते हैः-

- अन्तिम अक्षरों के अनुसार।
- आदि अक्षरों के अनुसार।

इनमें अन्तिम अक्षर से प्रत्याहार बनाना अधिक उपयुक्त है और अष्टाध्यायी के अनुसार है।
अन्तिम अक्षर के अनुसार प्रत्याहार सूत्र –

1. अइउण् – इससे एक प्रत्याहार बनता है।

    1. "अण्" – उरण् रपरः

2. ऋलृक् – इससे तीन प्रत्याहार बनते हैं।

    1. "अक्" – अकः सवर्णे दीर्घः
    2. "इक्" – इको गुणवृद्धी
    3. "उक्" – उगितश्च

3. एओङ्–इससे एक प्रत्याहार बनता है।

    1. "एङ्"-एङि पररूपम्

4. ऐऔच् – इससे चार प्रत्याहार बनते है-

    2. "अच्" अचोन्त्यादि टि

3. ''इच्''- इच एकाचोम् प्रत्ययवच्च
4. ''एच्''- एचोयवायावः
5. ''ऐच्''- वृद्धिरादैच्

5. हयवरट् - इससे एक प्रत्याहार बनता है-

1. ''अट्''-शश्छोटि,

6. लण-इससे तीन प्रत्याहार बनते है-

1. ''अण्''- अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः
2. ''इण्'' - इण्कोः
3. ''यण्'' - इको यणचि

7. ञमङणनम् - इससे चार प्रत्याहार बनते है-

1. ''अम्'' - पुमः खय्यम्परे
2. ''यम्'' - हलो यमां यमि लोपः
3. ''ङम्'' - ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्
4. ''ञम्'' - ञमन्ताड्डः (उणादि सूत्र)

8. झभञ् - इससे एक प्रत्याहार बनता है-

1. ''यञ्'' - अतो दीर्घो यञि

9. ''घढध''-इससे दो प्रत्याहार बनते है-

1. ''झष्''
2. ''भष'' - एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः

10. जबगडदश् - इससे छः प्रत्याहार बनते है-

1. ''अश्'' - भोभगोघो अपूर्वस्य योशि
2. ''हश्'' - हशि च
3. ''वश्'' - नेड् वशि कृति

4. ''झश''
5. ''जश्'' – झलां जश् झशि
6. ''बश'' – एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः

11. खफछठथचटतव् – इससे केवल एक प्रत्याहार बनेगाः–

1. छव् – ष्नश्छव्यप्रशान्ष

12. कपय् – इससे 5 प्रत्याहार बनेंगे–

1. ''यय्'' – अनुस्वारस्य ययि परसवर्णःष
2. ''मय्'' – मय ञो वो वाष
3. ''झय्'' – झयो होन्यतरस्याम्ष
4. ''खय्'' – पुमः खय्यम्परेष
5. ''चय्'' – चयो द्वितीयः शरि पौष्करसादेःष

13. शषसर् – इस सूत्र से 5 प्रत्याहार बनेंगेः–

1. ''यर्'' – यरोनुनासिकेनुनासिको वाष
2. ''झर्'' – झरो झरि सवर्णेष
3. ''खर्'' – खरि चष
4. ''चर्'' – अभ्यासे चर्चष
5. ''शर्'' – वा शरिष

14– हल्कृइस सूत्र से 6 प्रत्याहार बनेंगेः–

1. अल् – 'अलोन्त्यात् पूर्व उपधा' अल्– प्रत्याहार में प्रारम्भिक अ वर्ण और अन्तिम वर्ण ल् से ''अल्'' प्रत्याहार बनता है । अल् कहने से सभी वर्ण गृहीत होंगे ।
2. हल् – 'हलोनन्तराः संयोगाः' हल् – प्रत्याहार में 'हयवरट्' के 'ह' से लेकर 'हल्' के 'ल्' तक सभी वर्ण गृहीत होंगे । 'हल्' प्रत्याहार में सभी व्यञ्जन वर्ण आ जाते हैं ।
3. वल् – ''लोपो व्योर्वलि''
4. रल् – 'रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च'
5. झल् – 'झलो झलि'
6. शल् – 'शल इगुपधादनिटः क्सः'

इस प्रकार कुल 43 प्रत्याहार अन्तिम वर्ण से बनाए गए । आदि वर्ण से भी ये 43 प्रत्याहार बनाकर दिखायेंगे ।

- अकार वर्ण से 8 प्रत्याहार बनेंगेः- अण्, अक्, अच्, अट्, अण्, अम्, अश्, अल् ।
- इकार से तीन प्रत्याहार बनते हैंः- इक्, इच्, इण् ।
- उकार से एकः- उक् ।
- एकार से दोः- एङ् , एच् ।
- ऐकार से एक-ऐच् ।
- हकार से दो-हश्, हल् ।
- यकार से पाँच-यण्, यम्, यञ्, यय्, र्य ।
- वकार से दो-वश्, वल् ।
- रेफ से एक-रल् ।
- मकार से एक-मय् ।
- ङकार से एक-ङम् ।
- झकार से पाँच-झष्, झश्, झय्, झर्, झल् ।
- भकार से एक-भष् ।
- जकार से एक-जश् ।
- बकार से एक- बश् ।
- छकार से एक-छव् ।
- खकार से दो-खय्, खर् ।
- चकार से एक-चर् ।
- शकार से दो-शर्, शल् ।

ये कुल 41 प्रत्याहार हुए और ऊपर दो अन्य प्रत्याहार भी बताएँ हैं ।

एक प्रत्याहार उणादि से ''उमन्ताडुः'' से उम् प्रत्याहार और एक वार्तिक से ''चयोः द्वितीयः शरि पौष्करसादेः'' से बनता है। इस प्रकार कुल 43 प्रत्याहार हो जाते हैं।

वर्णों का उच्चारण स्थान

उच्चारणस्थान – मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

सूत्रम्	उच्चारित वर्ण (वर्णों के नाम)	उच्चारण स्थान
अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, आ (18 प्रकार) कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह और विसर्ग (ः) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
इचुयशानां तालु	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ् य और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण् ऱ् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
लृतुलसानां दन्ताः	ऌ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ	उ ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् । पवर्ग = प् फ् ब् भ् म् उपध्मानीय उप उफ (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
ञमङणनानां नासिका च	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
एदैतोः कण्ठतालु	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठ ओष्ठ
वकारस्य दन्तोष्ठम्	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ
जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	उक उख (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
नासिकाऽनुस्वारस्य	(-) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रो में नही बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं

  अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।
  जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।। (पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्गों के उः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

कण्ठ	तालू	मूर्धा
अ, आ, क् ख् ग् घ् ङ् ह् विसर्ग	इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्	ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् ऱ् ष्
दन्त	ओष्ठ	नासिका
लृ त् थ् द् ध् न् ल् स्	उ ऊ प् फ् ब् भ् म् उक उख	(–) अनुस्वार
कण्ठ तालु	कण्ठ ओष्ठ	दन्त ओष्ठ
ए ऐ	ओ औ	व्
कण्ठ + नासिका	तलु + नासिका	मूर्धा + नासिका
ङ्	ञ्	ण्
दन्त + नासिका	ओष्ठ + नासिका	जह्वामूलीयस्य
न्	म्	उक उख

वर्णों का आभ्यान्तर एवं बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न– वर्गों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं।

प्रयत्न दो प्रकार का होता है

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न– आभ्यन्तर का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्गों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है ।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है

1. स्पृष्ट– इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा–कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें स्पर्श वर्ण कहते हैं। इसमें क से म तक के 25 वर्ण आते हैं। स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्
2. ईषत् स्पृष्ट– ईषत् का अर्थ है– थोडा स्पृष्ट का अर्थ है छुआ गया।
   इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोडा स्पर्श करती है। इसमें य् व् ऱ् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं।

ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्

3. विवृत– विवृत का अर्थ है– खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पडता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। विवृतं स्वराणाम् जैसे– अ, इ, उ, ऋ, ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।
4. ईषत् विवृत– ईषत् का अर्थ है– थोडा विवृत का अर्थ है खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पडता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह इन चार ऊष्म वर्गों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।

ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्

5. संवृत– संवृत का अर्थ है– ढका हुआ या बन्द।

इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व अ का प्रयत्न संवृत होता है।

ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्

किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में अ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है

प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव

आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका

स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्विवृत	विवृत	संवृत
(क से म तक) क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म्	अन्तःस्थ वर्ण (वर्ण) य् व् र् ल्	ऊष्म वर्ण (शल्) श् ष् स् ह्	अच् अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ	अ

बाह्य प्रयत्न– मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है– बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष प्रया
7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

विवार श्वास अोष- खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च

विवार श्वास अघोष

खर्

ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प्

श् ष् स्

संवार नाद घोष- हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। -

हशः संवारा नादा घोषाश्च इसे संक्षेप में संनाघो हशः भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष

हश्

ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ्

घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्

अल्पप्राण- अल्प का अर्थ है- थोडा। प्राण का अर्थ होता है- वायु । जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना पडे उसे अल्पप्राण कहते हैं।

वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।
"वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा-यणश्च अल्पप्राणाः" अल्पप्राण वर्ण हैं-
कवर्ग - क ग ङ चवर्ग - च ज ञ टवर्ग - ट ड ण तवर्ग - त द न पवर्ग - प ब म
यण - य व र ल इस प्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

महाप्राण

महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु।
जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पडे उसे महाप्राण कहते हैं।
महाप्राण- वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह्) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

"वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थौ शलश्च-महाप्राणाः"

महाप्राण वर्ण है

कवर्ग - ख छ

चवर्ग - छ झ

टवर्ग - ठ ढ

तवर्ग - थ ध

पवर्ग - फ भ

शल् - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जन वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।
ध्यान दें- किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का है तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण ख प्रत्याहार का है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-

ह- संवार नाद घोष महाप्राण

ख- विवार श्वास अघोष महाप्राण

य- संवार नाद घोष अल्पप्राण

क- विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

उदात्त- उच्चैरुदात्तः (1+2+29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।
अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः (1+2+30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

स्वरित- समाहारः स्वरितः (1+2+31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

- उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-
- अनुदात्त अक्षर के नीचे पडी लाइन, स्वरित के ऊपर खडी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता। जैसे- स न: पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव। (ऋग्वेद 1.1.9)

बाह्यप्रयत्न बोधक तालिका

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर् क ख च छ ट ठ त थ प फ श ष स	हश् ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य व र ल	वर्गों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् क ग ङ च ज ञ ट ड ण त द न प ब म य व र ल	वर्गों के द्वितीय चतुर्थ और शल् ख छ छ झ ठ ढ थ ध क ञ श ष स ह	अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ

शब्दरूप

अकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामः	श्यामः	शिक्षकः	देवः	बालकः
द्वितीया	रामम्	श्यामम्	शिक्षकम्	देवम्	बालकम्
तृतीया	रामेण	श्यामेन	शिक्षकेण	देवेन	बालकेन
चतुर्थी	रामाय	श्यामाय	शिक्षकाय	देवाय	बालकाय
पञ्चमी	रामात्	श्यामात्	शिक्षकात्	देवात्	बालकात्
षष्ठी	रामस्य	श्यामस्य	शिक्षकस्य	देवस्य	बालकस्य
सप्तमी	रामे	श्यामे	शिक्षके हे	देवे	बालके
सम्बोधन	हे राम!	हे श्याम!	शिक्षक!	हे देव!	हे बालक!

अकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
द्वितीया	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
तृतीया	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
चतुर्थी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
पञ्चमी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
षष्ठी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सप्तमी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सम्बोधन	हे रामौ!	हे श्यामौ!	हे शिक्षकौ!	हे देवौ!	हे बालकौ!

अकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामाः	श्यामाः	शिक्षकाः	देवाः	बालकाः
द्वितीया	रामान्	श्यामान्	शिक्षकान्	देवान्	बालकान्
तृतीया	रामैः	श्यामैः	शिक्षकैः	देवैः	बालकैः
चतुर्थी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
पञ्चमी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
षष्ठी	रामाणाम्	श्यामानाम्	शिक्षकाणाम्	देवानाम्	बालकानाम्
सप्तमी	रामेषु	श्यामेषु	शिक्षकेषु	देवेषु	बालकेषु
सम्बोधन	हे रामाः!	हे श्यामाः!	हे शिक्षकाः!	हे देवाः!	हे बालकाः!

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नोट– निम्नलिखित शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा। कृष्ण, वृक्ष, कोद्धि (विद्वान), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सूत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा।